भारिल्लद्वय की पुस्तकें पाठ्यक्रम में सम्मिलित

उदयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री के अथक् प्रयासों से अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित **ध्यान का स्वरूप** एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित **सामान्य श्रावकाचार** पुस्तक को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के एम.ए. (फाइनल) के जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य विषय के तृतीय प्रश्नपत्र (75 अंक) में सम्मिलित किया गया है। इस कार्य में प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एच.सी.जैन का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञातव्य है कि पूर्व में भी सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के पीएच.डी. कोर्स वर्क में डॉ. भारिल्ल की **परमभावप्रकाशक नयचक्र** एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की **इन भावों का फल क्या होगा** पुस्तकें सम्मिलित हो चुकी हैं।

29वाँ जैन अध्यात्म महोत्सव सम्पन्न

मुम्बई : जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल्स फैडरेशन, मुम्बई द्वारा दि. 4 से 11 सितम्बर तक आयोजित 29वाँ जैन अध्यात्म महोत्सव (पर्यूषण व्याख्यानमाला) के अंतर्गत मुम्बई के विभिन्न सर्कल्स चौपाटी, ताडदेव, दादर, वालकेश्वर, घाटकोपर, मांडवी आदि में आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर के विभिन्न विषयों पर हुए व्याख्यानों का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

समयसार अनुशीलन पर गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल स्मारक भवन में 13वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनाँक 18 अक्टूबर को **समयसार अनुशीलन** विषय पर टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्री नरेशजी पाटोदी कोलकाता ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी बजाज कोलकाता, श्री श्रेयांसकुमारजी कोलकाता मंचासीन थे।

वक्ताओं के रूप में आराध्य टडैया मुम्बई, आशीष जैन टोंक, भावेश जैन, विकास जैन इन्दौर, रजित जैन भिण्ड एवं वीरेन्द्र जैन बकस्वाहा ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

संचालन जयेश जैन उदयपुर ने एवं मंगलाचरण ऋषिकेश जैन औरंगाबाद ने किया। अन्त में आभार प्रदर्शन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 29 328 अंक : 4

अबके ऐसी दिवाली...

अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ, कबहूँ फेर न दुखड़ा पाऊँ।। टेक।।
आन कुदेव कुरीति छाँड के, श्री महावीर चितारुँ।
राग - द्वेष का मैल जलाकर, उज्ज्वल ज्योति जगाऊँ।।
अपनी मुक्ति-तिया हर्षाऊँ।। 1।।
निज अनुभूति महालक्ष्मी का, वास हृदय करवाऊँ।
निजगुण लाभ दोष टोटे का, लेखा ठीक लगाऊँ।।
जासो फेर न टोटा पाऊँ।। 2।।
ज्ञान रतन के दीप में, तप का तेल पवित्र भराऊँ।
अनुभव ज्योति जगा के, मिथ्या अन्धकार बिनसाऊँ।।
जासों शिव की गैल निहारूँ।।3।।
अष्ट करम का फोड़ा फटाका, विजयी जिन कहलाऊँ।
शुद्ध बुद्ध सुखकंद मनोहर, शील स्वभाव लखाऊँ।।
जासों शिवगोरी बिलसाऊँ।। 4।।

छहढाला प्रवचन

मोक्षमार्ग की आराधना का उपदेश

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता-बिन कहिए,
आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव, मग सो द्विविध विचारो,
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो ।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

सुख तो आत्मा का स्वभाव है, राग आत्मा का स्वभाव नहीं है; अत: राग आत्मा के सुख का कारण नहीं हो सकता। सुख जिसका स्वभाव है, उसको जानने से - अनुभव में लेने से ही सुख होता है। सभी जीव सुख तो चाहते हैं; परन्तु अपने सुखस्वभाव को भूलकर राग में या संयोग में सुख खोजते हैं। अरे भाई ! सुख राग में होता है कि वीतरागता में ? वीतरागता ही सुख है, उसको जीव ने कभी नहीं जाना। जो राग में या पुण्य में सुख मानता है, उसे मोक्ष की श्रद्धा नहीं है। इसलिए कहा कि सुख तो आकुलता से रहित है और ऐसे सुख के लिए शिवमार्ग में लगना चाहिए। आत्मा के ऐसे अतीन्द्रियसुख को धर्मी जीव ही जानते हैं और स्व-पर के भेदज्ञानपूर्वक वीतराग-विज्ञान से ही सुख का अनुभव करते हैं।

पहली ढाल में चार गति के दु:ख दिखाये; दूसरी ढाल में उन दु:खों के कारणरूप मिथ्यात्वादि को छोड़कर आत्महित के पथ में लगने के लिए कहा। अब इस तीसरी ढाल में आत्महित का उपाय दिखाते हैं। पूर्वाचार्यों के कथन का सार लेकर पण्डितजी ने इस छहढालारूपी गागर में सागर भर दिया है। संस्कृत-व्याकरण आदि न आते हों तो भी जिज्ञासु जीव समझ सकें - ऐसी सुगम शैली से हिन्दी भाषा में प्रयोजनभूत कथन किया है।

आत्मा का कल्याण, हित या सच्चा सुख - सब एक ही है। जिस भाव से अतीन्द्रियसुख हो, वही आत्महित है; इसके बिना और कहीं भी - शरीर में, धन

में या प्रतिष्ठा आदि में सुख नहीं है। उनके लक्ष्य में तो आकुलता है; परन्तु अज्ञानी उसमें सुख मानते हैं। पुण्य बँधने के भाव में आकुलता है और उस पुण्य के फल भोगने में भी आकुलता है; सुख उसमें कहीं भी नहीं है। बाह्य विषयों के बिना आत्मा स्वयं सुखस्वरूप है। ऐसे चैतन्यस्वरूप आत्मा के अनुभव में वीतरागी निराकुलता ही सच्चा सुख है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप वीतराग-विज्ञान के बिना ऐसा सुख किसी को नहीं होता। धर्मी जीव को इन्द्रपद के वैभव में भी प्रसन्नता नहीं, चैतन्य के आनन्द में ही प्रसन्नता है।

सुख अर्थात् निराकुलता; अतीन्द्रिय आनन्द का पुंज आत्मा है। सुख अपने अन्तर में है; परन्तु उसको भूलकर बाहर में सुख मानकर जीव हैरान हो रहा है।

अरे जीव ! तू बाहर में से सुख लेना चाहता है; परन्तु तेरे ही अन्तर में आत्मा का सच्चा सुख है, उसको तू भूल रहा है। अरे, यह बात तू जरा लक्ष्य में तो ले।

मेरा सुख मेरे आत्मा में ही है - ऐसा लक्ष्य करते ही बाह्य विषयों में से (अशुभ एवं शुभ में से) सुख लेने की बुद्धि नहीं रहती और परिणति के अन्तर में आत्मसन्मुख होने पर अतीन्द्रिय सुख अनुभव में आता है; ऐसा सुख ही सच्चा सुख है। बाहर में सुख दिखता है, वह तो अज्ञानी की मात्र कल्पना ही है, मृगमरीचिका में जल की भाँति वह कल्पना भी मिथ्या है।

जैसे हिरण मृगमरीचिका को पानी समझकर, उसे पीने को दौड़ता है, बहुत दौड़ता है तो भी उसे पानी नहीं मिलता। कहाँ से मिले ? वहाँ पानी हो, तब मिले न ? वहाँ पानी है ही नहीं, वहाँ तो गरमागरम रेत है। अरे मृग ! बहुत दूर-दूर तक दौड़ने पर भी पानी की शीतल हवा भी तुझे न मिली, तब तू सोच तो सही कि तुझे जो दिख रहा है, वह सचमुच में पानी नहीं है; परन्तु तेरी कल्पना ही है, दृष्टिभ्रम है; परन्तु मृगजल के पीछे वेग से दौड़ने वाले मृग को इतना विचार करने का अवकाश ही कहाँ है ? उसीप्रकार मृगजल जैसे विषयों की ओर दृष्टिपात करने वाले (दौड़ने वाले) प्राणियों को इतना विचार भी नहीं आता कि अरे ! अनादिकाल से अशुभ एवं शुभ विषयों के पीछे दौड़ते हुए भी मुझे जरा-सा भी सुख क्यों नहीं मिला ? सुख की शीतल हवा भी क्यों न आयी ? कहाँ से आवे ? उसमें सुख हो, तब आये न ? विषयों के वेदन में तो गरम रेत जैसी आकुलता ही है; उसमें सुख देखना तो अज्ञानी की दृष्टि का भ्रम ही है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

निज परमात्मतत्त्व को बंधस्थान नहीं

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 40वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो ठिदिबंधट्ठाणा पयडिट्ठाणा पदेसठाणा वा।
णो अणुभागट्ठाणा जीवस्स ण उदयठाणा वा।।40।।
स्थिति अनुभाग बंध एवं प्रकृति परदेश के।
अर उदय के स्थान आतम में नहीं - यह जानिये।।40।।

जीव को स्थितिबंध स्थान नहीं है, प्रकृति स्थान नहीं हैं, प्रदेश स्थान नहीं हैं, अनुभाग स्थान नहीं हैं अथवा उदय स्थान नहीं हैं।

यहाँ (इस गाथा में) प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध के स्थानों तथा उदय के स्थानों का समूह जीव को नहीं है - ऐसा कहा है।

सदा निरुपराग[१] जिसका स्वरूप है ऐसे निरंजन (निर्दोष) निज परमात्मतत्त्व को वास्तव में द्रव्यकर्म के जघन्य, मध्यम या उत्कृष्ट स्थितिबन्ध के स्थान नहीं हैं। ज्ञानावरणादि अष्टविध कर्मों के उस-उस कर्म के योग्य पुद्गलद्रव्य का स्वआकार प्रकृतिबन्ध है; उसके स्थान (निरंजन निज परमात्मतत्त्व को) नहीं हैं। अशुद्ध अन्तःतत्त्व (अशुद्ध आत्मा) के और कर्मपुद्गल के प्रदेशों का परस्पर प्रवेश प्रदेशबन्ध है; इस बन्ध के स्थान भी (निरंजन निज परमात्मतत्त्व को) नहीं हैं। शुभाशुभ कर्म की निर्जरा के समय सुख-दुःखरूप फल देने की शक्तिवाला अनुभागबन्ध है; इसके स्थानों का भी अवकाश (निरंजन निज परमात्मतत्त्व में) नहीं है और द्रव्यकर्म तथा भाकर्म के उदय के स्थानों का भी अवकाश (निरंजन निज परमात्मतत्त्व में) नहीं है।

विकाररहित त्रिकाली एकरूप शुद्धजीव को यहाँ जीव कहा है।

शुद्धजीव कैसा है ? एकसमय का विकार, कर्म, उघाड़ या निमित्त त्रिकाली

१. निरुपराग = उपराग रहित। (उपराग = किसी पदार्थ में, अन्य उपाधि की समीपता के निमित्त से होनेवाला उपाधि के अनुरूप विकारी भाव; औपाधिक भाव; विकार; मलिनता।

शुद्धस्वभाव में नहीं है। जीव का शुद्धभाव त्रिकाल एकरूप है - ऐसे जीव की प्रतीति करना सम्यग्दर्शन है।

यहाँ द्रव्य-गुण-पर्यायसहित प्रमाण का विषय होनेवाले जीव को नहीं लेना है, विकारीपर्यायवाला अथवा निमित्त के सम्बन्धवाला जीव भी नहीं लेना है; किन्तु विकार से रहित एकरूप त्रिकाली शुद्धस्वभाववाला जीव लेना है। ऐसे जीव की यथार्थ श्रद्धा और ज्ञान करके अपने त्रिकालीस्वभाव की ओर ढले तो उस जीव को विकार का अथवा पर्याय का यथार्थ ज्ञान होता है और इसप्रकार दोनों पक्षों का ज्ञान होने पर सम्पूर्ण जीव का ज्ञान यथार्थ होता है और वही प्रमाणज्ञान है।

इस गाथा में शुद्धजीव कैसा है ? उसका विवेचन करते हैं।

अपने शुद्धस्वभाव में मलिनता या अपूर्णता नहीं तथा कर्म का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध भी नहीं।

यहाँ सदा निरुपराग स्वरूप निरंजन (निर्दोष) निज-परमात्मतत्त्व अथवा शुद्धजीव का स्वरूप कहते हैं। शुद्धजीवतत्त्व मलिनता से रहित है। किसी पदार्थ में अन्य उपाधि की समीपता के निमित्त से हुई उपाधि और अनुरूप विकारीभाव को उपराग कहते हैं। शुद्धजीव में ऐसा उपराग नहीं है।

जिसप्रकार स्फटिक के समीप लाल फूल हो तो उसमें लाल झाईं पड़ती है और काला फूल हो तो काली झाईं पड़ती है। लाल के समय काली और काले के समय लाल झाईं नहीं पड़ती। काली अथवा लाल झाईं उपाधि के अनुरूप है और उपाधि निमित्त है; फिर भी लाल डंक के कारण लाल झाईं नहीं पड़ी है, स्फटिक की योग्यता के कारण लाल झाईं पड़ती है; तो भी लाल डंक के समय काली झाईं पड़ने लगे - ऐसा नहीं हो सकता।

उसीप्रकार आत्मा में दर्शनमोहनीय कर्म का उदय हो और ज्ञान रुक जाय - ऐसा नहीं बनता, उससे तो श्रद्धा में विपर्यास होता है; फिर भी वह विपरीतता कर्म के कारण नहीं हुई है। एक ही समय में आठों कर्म उदय में हैं। ज्ञान की हीनदशा में ज्ञानावरणी कर्म का उदय अनुकूल निमित्त है; किन्तु ज्ञानावरणी का उदय राग को अनुकूल नहीं है।

इसप्रकार ज्ञान, दर्शन तथा वीर्य की हीनदशा, श्रद्धा व चारित्र की विपरीतदशा, इत्यादि को उपराग-औपाधिकभाव कहते हैं और वे तत्सम्बन्धित कर्मों के अनुरूप हैं; तथापि कर्मों के कारण मलिनता नहीं है। हाँ, उस मलिनता और कर्मों में निमित्त-

(शेष पृष्ठ 33 पर...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आत्मा और पर का संबंध नहीं है - यह समझने का प्रयोजन क्या ?

उत्तर : पर के साथ संबंध नहीं अर्थात् परलक्ष्य से जो विकार होता है, वह मेरा स्वरूप नहीं है - इसप्रकार पर के साथ का संबंध तोड़कर तथा अपनी पर्याय का भी लक्ष्य छोड़कर अभेदस्वभाव की दृष्टि करना - यही प्रयोजन है।

प्रश्न : राग को जीव का कहें या पुद्गल का ?

उत्तर : राग को जीव अपनी पर्याय में स्वयं करता है; अत: पर्याय दृष्टि से जीव का है। द्रव्यदृष्टि से जीवस्वभाव में राग है ही नहीं; अत: राग जीव का नहीं, पुद्गल के लक्ष से होता होने से पुद्गल का है।

प्रश्न : एक खूँटे से बाँधकर रखिये न ?

उत्तर : जिस अपेक्षा से कहा जाता है, उस अपेक्षा से खूँटा मजबूत ही है। राग को सर्वथा पर का ही माने तो कभी उसका अभाव नहीं हो सकेगा। अत: पहले राग स्वयं ही अपने अपराध से करता है, कर्म नहीं कराते; ऐसा निर्णय करके फिर स्वभावदृष्टि कराने के लिए राग मेरा स्वरूप नहीं, औपाधिक भाव है - ऐसा कहा है। यहाँ राग को कर्मजन्य कहकर राग का लक्ष्य छुड़ाकर स्वभाव का लक्ष्य कराया है।

प्रश्न : समयसार गाथा 6 में समस्त अन्य द्रव्य के भावों से भिन्नपने उपासने में आता हुआ 'शुद्ध' कहा जाता है - ऐसा कहा। यहाँ विकार से भिन्न उपासने में आता है - ऐसा क्यों नहीं कहा ?

उत्तर : अन्य द्रव्य के भावों से भिन्न उपासने पर विकार और पर्याय के ऊपर का लक्ष्य जाता है।

प्रश्न : आत्मा प्रमत्त-अप्रमत्तपने नहीं होता, इसका अर्थ क्या है ?

उत्तर : आत्मा शुभ-अशुभरूप नहीं होता। यदि शुभ-अशुभरूप हो तो प्रमत्त-अप्रमत्तरूप हो, किन्तु शुद्धात्मा शुभाशुभरूप से नहीं परिणमता, इसलिए प्रमत्त-अप्रमत्तरूप से भी नहीं होता। अप्रमत्त सातवें गुणस्थान से तेरहवें तक है, उस पर्यायरूप आत्मा नहीं होता। आत्मा एकरूप ज्ञायकभावस्वरूप है। शुभाशुभरूप नहीं होता, इसलिए प्रमत्तरूप नहीं होता और प्रमत्तरूप हो तो उसका अभाव करके अप्रमत्तरूप हो। आत्मा प्रमत्त-अप्रमत्त के भेदरूप नहीं होता। एकरूप ज्ञायकभाव स्वरूप ही है।

समाचार दर्शन -

तेरहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित तेरहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन रविवार दिनाँक 10 अक्टूबर को श्री प्रकाशचंदजी सेठी, जयपुर के करकमलों से हुआ।

उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर ने, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन जयपुर ने तथा मंच उद्घाटन श्रीमती सुशीला-शांतिलालजी जैन अलवरवालों ने किया।

शिविर में प्रतिदिन के कार्यक्रमों की शुरुआत गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों से होती थी।

मुख्य प्रवचन – शिविर में प्रतिदिन सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज की गाथा 132-140 तक मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों के साथ-साथ पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री मन्दसौर, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर एवं पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर के व्याख्यानों का लाभ मिला।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त महाविद्यालय के छात्र विद्वानों के प्रवचन हुये।

शिक्षण कक्षायें – निमित्तोपादान पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा, गुणस्थान विवेचन पर ब्र. यशपालजी जैन एवं डॉ.दीपकजी जैन द्वारा, लघु जैनसिद्धांत प्रवेशिका पर ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा, नयचक्र (पंचाध्यायी के नय) पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा, नयचक्र (व्यवहार नय) पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रौढ कक्षा (प्रात: 6.00 से 6.40 तक) – इसमें पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ एवं पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम के व्याख्यानों का लाभ मिला। इसके तत्काल बाद 6.40 से 7.00 बजे तक जी-जागरण चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था, जिसे शिविरार्थी अत्यंत रुचिपूर्वक सुनते थे।

दोपहर में बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् प्रवचनों के अन्तर्गत पण्डित मनीषजी कहान शास्त्री खड़ैरी, पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद, पण्डित शीतलचंदजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री कोटा, डॉ.भागचंदजी जैन जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, डॉ. दीपकजी जैन जयपुर आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विशिष्ट कार्यक्रम – दिनाँक 14 व 15 अक्टूबर को दोपहर 2.30 बजे से **जैन अध्यात्म को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी आयोजित की गई। दिनाँक 16 अक्टूबर दोपहर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 32वां राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया। श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का 5वां अधिवेशन दिनाँक 17 अक्टूबर को रखा गया। दिनाँक 18 अक्टूबर दोपहर 3 बजे महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा **समयसार अनुशीलन** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

सांयकालीन बालकक्षा कु.प्रतीति पाटील द्वारा ली गई।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती शशि प्रकाशचंदजी सेठी परिवार जयपुर थे। शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता, श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्री चक्रेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमारजी जैन परिवार कोलकाता थे।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती मुन्नीबाई ध.प. श्री राजकुमारजी सेठी वैशाली नगर जयपुर, श्रीमती अमृतबेन ध.प. स्व. श्री बेलजीलाल शाह मुम्बई, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा थे।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता स्व.श्री संतोषकुमार राजकुमार जैन की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रीता जैन एवं सुपुत्र श्री सौरभ जैन फिरोजाबाद, श्री सुशीलकुमारजी प्रदीपकुमारजी रपरिया परिवार कोलकाता, श्री वज्रसेनजी जैन दिल्ली, श्री राहुलजी गंगवाल श्यामनगर एवं श्री गौरवजी जैन जनता कॉलोनी जयपुर थे। विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद के निर्देशन में संपन्न हुये।

शिविर समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने कहा कि शिविर में २९ विद्वानों के माध्यम से लगभग ८९० साधर्मियों ने प्रतिदिन १५-१५ घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। लगभग २८००० घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा २,५७,५१० रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। इस शिविर में लगभग १२२ स्नातकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। ●

विशेष गोष्ठी का आयोजन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनाँक 14 व 15 अक्टूबर को **जैन अध्यात्म को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनाँक 14 अक्टूबर को गोष्ठी की अध्यक्षता ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई एवं विशिष्ट वक्ता के रूप में पण्डित गौरवजी जैन इन्दौर व पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी मंचासीन थे। इस अवसर पर श्री टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल भी मंचासीन थे। 15 अक्टूबर को आयोजित गोष्ठी के द्वितीय सत्र में प्रमुख वक्ताओं के रूप में डॉ.वीरसागरजी दिल्ली (विभागाध्यक्ष - जैनदर्शन विभाग, एल.बी.एस.), डॉ. उदयचंदजी जैन (सेवानिवृत्त प्रोफेसर- मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर), पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाड़ा (प्राचार्य - ज्ञायक शिक्षक महाविद्यालय) एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर (राज.प्रभारी)थे।

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का –

३२वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 13वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 16 अक्टूबर को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का 32वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल के. मोटाणी मुम्बई ने की। अधिवेशन का उद्घाटन श्री शैलेष चिमनलालजी शाह की ओर से श्री कान्तीभाई मोटानी मुम्बई ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री विजयकुमारजी बड़जात्या इन्दौर (अध्यक्ष-म.प्र.प्रान्त) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अरुणजी वर्धमान भोपाल, श्री जितेन्द्रजी सोगानी भोपाल, श्री अजयजी सोगानी भोपाल, श्री नीलेशभाई मेहता मुम्बई व श्री नितिनभाई शाह मुम्बई मंचासीन थे।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल इत्यादि विद्वत् समुदाय के अलावा राष्ट्रीय महामंत्री पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, संगठन मंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, प्रचार मंत्री पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, संरक्षक श्री मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर, सदस्य पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, राज.प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, राज.प्रदेश उपाध्यक्ष महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजीवजी गोधा जयपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं जयपुर महानगर शाखा के अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी मंचासीन थे।

जयपुर महानगर शाखा के अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी के स्वागत भाषण के उपरांत श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली,डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, श्री पवनजी जैन मेरठ, श्री अरुणजी वर्धमान भोपाल, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, डॉ. भागचंदजी शास्त्री जयपुर आदि अनेक स्थानों के शाखा प्रभारी/ पदाधिकारियों ने अपनी रिपोर्ट एवं विचार प्रस्तुत किये।

मंच संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने एवं मंगलाचरण पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली ने किया।

जिनेन्द्र शास्त्री राज. प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के 32वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर निर्देशक मण्डल के निर्देशानुसार श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर की राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष के पद पर नियुक्ति की घोषणा की गयी। राजस्थान प्रदेश के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री को फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल के.मोटाणी ने शपथ दिलायी। फैडरेशन की कार्यकारिणी की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

पदभार ग्रहण करने के पश्चात् श्री शास्त्री ने सभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि वे राजस्थान प्रदेश में गांव-गांव में फैडरेशन शाखाओं एवं वीतराग-विज्ञान पाठशाला का गठन कर युवाओं में संगठन एवं जैनधर्म के प्रति रुचि बढाने का प्रयास करेंगे। उनने बताया कि राजस्थान प्रदेश की नवीन कार्यकारिणी शीघ्र ही घोषित की जायेगी।

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद का –

पांचवाँ अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ स्मारक भवन में 13वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनाँक 17 अक्टूबर को टोडरमल स्नातक परिषद् का 5वां अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की, साथ ही कार्याध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील भी मंचासीन थे। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुभाषजी चांदीवाल मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री विक्रमभाई कामदार मुम्बई, श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई, श्री श्रेयांसकुमारजी कोलकाता, श्री सुरेशकुमारजी गांधी मन्दसौर व श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के अतिरिक्त कार्यकारिणी सदस्य डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री टोकर, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर तथा पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा मंचासीन थे।

कार्यक्रम को प्रारंभ करते हुये अपने स्वागत भाषण में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने कहा कि समान विचारधारा वाले लोग सहज ही संगठित हो जाते हैं, सभी स्नातकों का उद्देश्य आत्मानुभूति एवं तत्त्वप्रचार है; अत: इसी उद्देश्य से इस संस्था का गठन किया गया है।

प्रमुख वक्ताओं के अन्तर्गत डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री टोकर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली एवं नियतिबेन जवेरी यू.एस.ए. ने अपने विचार व्यक्त किये ।

अधिवेशन में परिषद ने अपने सदस्यों को विशिष्ट उपलब्धियां प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई दी। इस क्रम में श्री संतोषजी बकस्वाहा व श्री संजयजी शास्त्री को जे.आर.एफ. परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिये, श्री सुधीरजी शास्त्री शाहगढ व श्री दीपकजी शास्त्री मजलेकर का जीतो में आई.ए.एस. की कोचिंग हेतु चयन के लिये, श्री ऋषभजी शास्त्री ललितपुर, श्री श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, श्री नितिनजी बड़कुल विदिशा को पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त करने हेतु, श्री संदीपजी चौगुले के 2009 में राज. सं.वि.वि. की मेरिट में प्रथम स्थान प्राप्त करने हेतु, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर को विशिष्ट शिक्षक सम्मान प्राप्त करने हेतु डॉ.श्रीयांसजी सिंघई को प्रोफेसर के पद पर प्रमोशन हेतु परिषद की ओर से शुभकामनायें दी गयीं।

पण्डित परमात्मप्रकाशजी ने अमेरिका में ली गई बालकक्षा के अपने अनुभव सुनाये। साथ ही अमेरिका में विद्वानों की आवश्यकता को पूरा करने का वचन दिया। अध्यक्षीय भाषण में पण्डित अभयकुमारजी ने कहा कि विद्वान आपस में जब भी मिले तत्त्वचर्चा करें; शास्त्र स्वाध्याय दूसरों को पढाने के लिये नहीं; बल्कि आत्मानुभूति के उद्देश्य से करें। आपने गुरुदेवश्री को अधिक से अधिक सुनने की प्रेरणा भी दी।

अधिवेशन का संचालन परिषद के महामंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने एवं मंगलाचरण कु.परिणति पाटील ने किया।

दशलक्षण महापर्व धूमधाम से मनाया गया

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 12 सितम्बर से 22 सितम्बर, 2010 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

1. बड़ौदा (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर दिनाँक 12 से 22 सितम्बर 2010 तक मुमुक्षु मण्डल एवं दि. जैन समाज के आग्रह पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रतिदिन रात्रि में **धर्म के दशलक्षण** पर मार्मिक व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त प्रथम दिन प्रात: **णमोकार महामंत्र** एवं पर्व के मध्य शनिवार-रविवार को **आत्मा की खोज** व **मैं स्वयं भगवान हूँ** पर विशेष प्रवचन भी हुये। एक दिन रात्रि में प्रवचन के पूर्व पश्चाताप खण्ड काव्य का वाचन किया गया।

इसी प्रसंग पर प्रात: पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर के समयसार के निर्जरा अधिकार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल बाल कक्षा पण्डित सुदीपजी शास्त्री अमरमऊ ने ली।

इस अवसर पर श्री अजितभाई जैन परिवार द्वारा धर्म के दशलक्षण, अहिंसा, शाकाहार, मैं स्वयं भगवान हूँ इत्यादि 7 पुस्तकों के 1250 सेट बडौदा जैन समाज में वितरित किये गये।

सम्पूर्ण आयोजन में सैंकड़ों लोगों ने धर्मलाभ लिया तथा लगभग 13 हजार रुपये के सी.डी. एवं डी.वी.डी. कैसेट घर-घर पहुंचे।

दिनाँक 23 सितम्बर को बड़ौदा से लौटते समय **सूरत** जैन समाज के विशेष आग्रह पर सायंकाल डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर विशेष प्रवचन हुआ। साथ ही पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर के प्रवचन का लाभ भी मिला।

2. जयपुर (बड़े दीवानजी का मंदिर) : यहाँ महापर्व के अवसर पर राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रतिदिन रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक एवं सरल भाषा में प्रवचनों का लाभ मिला। प्रवचन के पश्चात् टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों ने प्रश्नमंच कराया।

3. सिलवानी (म.प्र.) : यहाँ 6 से 24 सितम्बर तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा प्रात: गुणस्थान विवेचन पर प्रवचन एवं कक्षा, दोपहर में शंका-समाधान एवं रात्रि में ज्ञान समुच्चयसार के आधार से सात तत्त्वों पर प्रवचन हुये। 25 व 26 सितम्बर को बेगमगंज में भी आपके प्रवचनों का लाभ मिला।

4. अहमदाबाद-वस्त्रापुर : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्ग प्रकाशक व दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन किया गया,

जिसमें पण्डित रत्नेशजी शास्त्री हिम्मतनगर का सहयोग रहा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन श्री चिरेनभाई शाह व श्रद्धा जैन ने कराया।

5. मुम्बई-भूलेश्वर : यहाँ महापर्व के अवसर पर श्री 1008 चन्द्रप्रभ दि. जैन मंदिर में आचार्य विद्यासागरजी की शिष्या ब्र.सुशीलादीदी एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रतिदिन दोनों समय दो-दो प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: सामूहिक पूजन के उपरांत ब्र.दीदी द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा एवं पण्डित अभयकुमारजी द्वारा समयसार की 17-18वीं गाथा पर प्रवचन तथा सायंकाल पण्डित अभयजी के मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं तदुपरान्त ब्र.दीदी के दशलक्षण धर्मों पर मार्मिक एवं सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन सामूहिक पूजन-विधान पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा एवं पण्डित अभयजी खड़ैरी ने सम्पन्न कराई।

6. विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ दि. जैन बड़ा मंदिर किला अन्दर में श्री टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार गाथा-2 एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं दशधर्म पर सरल भाषा में मार्मिक प्रवचन हुये। उनके साथ ही पधारी उनकी सुपुत्री कु.परिणति पाटील ने दोपहर में द्रव्यसंग्रह की कक्षा ली एवं रात्रि में रोचक व ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जो समाज द्वारा विशेषरूप से सराहे गये।

प्रात: दशलक्षण विधान तथा सायं जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन हुआ। **- मलूकचंद जैन**

7. विदिशा-स्टेशन रोड़ (म.प्र.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दि.जैन सीमंधर जिनालय स्टेशन मंदिर में प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् डॉ.आर.के. जैन विदिशा द्वारा समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार की गाथा 69 पर मार्मिक प्रवचन हुये। दिनाँक 23 सितम्बर को पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के भी एक प्रवचन का लाभ मिला।

पर्व के समापन के अवसर पर सकल जैन समाज द्वारा दिनाँक 22, 24 व 26 सितम्बर को तीन दिन विशाल जुलूस निकाला गया। **- चक्रवर्ती जैन एडवोकेट**

8. मुम्बई (दादर) : यहाँ पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त ब्र.वासन्तीबेन आदि तीन ब्र.बहनों की कक्षाओं का भी लाभ मिला। रात्रि में पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा एवं पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी ने बालकक्षा का संचालन किया।

9. मुम्बई-भायंदर : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के प्रात: प्रवचनसार की गाथा 173-178, दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सायंकाल समयसार के संवर अधिकार की गाथा 181-185 के आधार से प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।**- किरीटभाई सी.गांधी**

10. कारंजा (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. हेमचंदजी 'हेम' द्वारा प्रात: प्रवचनसार की गाथा 1 से 33 के आधार पर, दोपहर में विभिन्न विषयों पर तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। तीन दिनों तक महावीर ब्रह्मचर्याश्रम में भी प्रवचनों का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन बच्चों के उद्देश्य से सन्मति भवन में 'विज्ञान एवं अध्यात्म का सम्बन्ध' विषय पर बहुत रोचक एवं सरल भाषा में व्याख्यान हुआ, जिसको सभी

बच्चों ने रुचिपूर्वक सुना। रात्रि में दो दिनों तक वहाँ के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

11. मुम्बई (मुमुक्षु मण्डल) : यहाँ जवेरी बाजार स्थित श्री सीमंधर जिनालय में दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: धर्म के दशलक्षण एवं ग्रंथाधिराज समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में ज्ञान एवं वैराग्यवर्धक लोकालोक के स्वरूप पर चर्चा की गई। अंतिम तीन दिनों में धार्मिक क्विज प्रतियोगिता का सुन्दर आयोजन किया गया।

12. छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान एवं दोनों समय प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में उन्हीं की ध.प. विदुषी स्वर्णलताजी द्वारा कक्षा ली गई। रात्रि में स्थानीय लोगों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

13. आशियाना (लखनऊ) : यहाँ पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा के प्रतिदिन प्रात: तत्त्वार्थसूत्र एवं समयसार पर तथा सायं धर्म के दशलक्षण एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। **– नरेशचंद जैन**

14. जावरा-रतलाम (म.प्र.) : यहाँ शास्त्री नगर स्थित श्री चन्द्रप्रभु दि.जैन मंदिर में ब्र.सुकुमालजी झांझरी द्वारा प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर, सायंकाल बालकक्षा एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दश धर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में मोक्षशास्त्र पर कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पदमा गंगवाल एवं रानी गोधा द्वारा कराये गये।

15. इन्दौर (रामाशा मन्दिर) : यहाँ पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। इनके साथ ही पधारे इनके सुपुत्र पण्डित सर्वज्ञजी शास्त्री द्वारा प्रात: मारवाड़ी मंदिर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई एवं सायंकाल रामाशा मंदिर में दश धर्मों पर प्रवचन किये गये।

दिनाँक 19 सितम्बर को पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा मारवाड़ी मंदिर में इन भावों का फल क्या होगा ? विषय पर विशेष व्याख्यान किया गया, जिसका युवावर्ग पर बहुत गहरा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

16. मुम्बई (मलाड) : यहाँ पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान एवं सायंकाल भक्ति पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई एवं पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई ने संपन्न कराई। रात्रि में स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

17. शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्म पर सरल सुबोध शैली में प्रवचन हुये। पण्डितजी द्वारा शांतिनाथ जिनालय एवं कोलारस बड़ा मंदिर में भी व्याख्यान हुआ। आपके माध्यम से युवा वर्ग में धार्मिक संस्कार जागृत हुये। आपने अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की बैठक ली, जिसमें फैडरेशन की गतिविधियां संचालित करने हेतु अनेक प्रकार के उपयोगी सुझाव दिये।

18. बारां (राज.) : यहाँ पण्डित सुरेशजी जैन गुना द्वारा प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर प्रवचन हुये। दोपहर में विदुषी अनुभूति द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई।

सायंकाल रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दस धर्मों का स्वरूप समझाया गया। रात्रि में प्रतिदिन प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। **– ऋषभचंद जैन**

19. अर्नाकुलम (केरल) : यहाँ महावीर दि. जैन मुमुक्षु चैत्यालय में जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: द्रव्यसंग्रह एवं सायंकाल धर्म के दशलक्षण पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में विदुषी सीमा जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के पहले एवं दूसरे अध्याय पर कक्षायें ली गई, जिसमें महिलाओं एवं पुरुषों ने बढ-चढकर भाग लिया तथा कंठपाठ के रूप में सुनाया।

त्रिचूर में बी.एड. में अध्ययनरत छात्र पण्डित दीपकजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित श्रेणिकजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित मिथुनजी शास्त्री बेलगांव एवं पण्डित अजयजी गोरे शास्त्री द्वारा शनिवार एवं रविवार को भव्य सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने वीतराग-विज्ञान पाठशाला का गठनकर श्री शैलेशजी दोशी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजुल दोशी द्वारा प्रत्येक रविवार को तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा तीसरे अध्याय से अध्यापन कराने का दायित्व सौंपा। **– नरेश दोशी**

20. नागपुर (महा.) : यहाँ इतवारी स्थित श्री महावीर विद्यानिकेतन में पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा प्रात: समयसार कलश 185 पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक व्याख्यान हुये। दोपहर में युवा फैडरेशन द्वारा पण्डित मुकेशजी कोठेदार, पण्डित सचिनजी मोदी खनियांधाना एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी के विधानाचार्यत्व में नियमसार विधान का आयोजन किया गया। सायंकाल विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रवचन का लाभ मिला एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

21. रामटेक-नागपुर (महा.) : यहाँ पण्डित विक्रान्तजी शास्त्री द्वारा तीनों समय क्रमश: दशधर्म, छहढाला एवं समयसार पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

22. शिकोहाबाद (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित मोहितजी शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन विधान, दोपहर में क्रमबद्धपर्याय की कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा व भक्ति के पश्चात् दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। यहाँ प्रतिदिन बालकक्षा का शुभारंभ एवं युवा फैडरेशन का गठन किया गया। मुक्त विद्यापीठ में भी अनेक लोगों ने प्रवेश लिया।

23. उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री शान्तिनाथ दि.जैन मंदिर हिरणमगरी सेक्टर-11 में पण्डित कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर द्वारा प्रात: पूजन के पश्चात् प्रवचनसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं सायंकाल नियमसार पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रवचन के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। क्षमावणी के अवसर पर जिनेन्द्र शोभायात्रा भी निकाली गई।

24. धामपुर-बिजनौर (उ.प्र.) : यहाँ श्री शांतिनाथ जिनालय में पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् दशधर्म पर प्रवचन, सायंकाल बालकक्षा तथा रात्रि में समाधितंत्र, षट्लेश्या, अनेकान्त आदि विषयों पर चर्चा हुई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

25. देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज

समयसार के कलश 136 पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की विवेचना एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान श्री दीपकजी धवल भोपाल एवं पण्डित समकितजी जैन कोटा द्वारा संपन्न कराया गया। गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन पर पण्डित विरागजी शास्त्री विवेचन करते थे। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन श्री दीपकजी धवल, कु.प्रज्ञा जैन एवं कु.ज्ञप्ति जैन द्वारा कराया गया।

26. करेली (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अशोकजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: प्रवचनसार की गाथा 80वीं पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त प्रात: पूजन-विधान, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रथम बार सकल जैन संघ का सामूहिक जुलूस निकाला गया। कार्यक्रमों की सफलता से उत्साहित होकर युवा फैडरेशन ने आगामी 25 दिसम्बर से 2 जनवरी तक करेली में आवासीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर आयोजित करने की घोषणा की।

– प्रवेश भारिल्ल

27. बैतूल (म.प्र.) : यहाँ पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन एवं बालकक्षा ली गयी। दोपहर में तारण-तरण चैत्यालय में भक्तामर स्तोत्र पर महिला-कक्षा ली गयी। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दशलक्षण धर्म पर व्याख्यान हुये एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। चतुर्दशी के दिन दिगम्बर श्वेताम्बर जैन मंदिर में दैनिक वीतराग-विज्ञान पाठशाला का उद्घाटन किया गया।

– उत्तमचंद सरावगी

28. भोपाल-कोहेफिजा (म.प्र.) : यहाँ पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

29. जबलपुर (मुमुक्षु मण्डल) : यहाँ पायलवाला मार्केट में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ के प्रात: नित्य-नियम पूजन के पश्चात् समयसार की प्रारंभिक गाथाओं पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में 47 शक्तियों पर कक्षा एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दशलक्षण पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। विदुषी श्रुति जैन द्वारा सायंकाल बालकक्षा ली गई एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

30. चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री 1008 अतिशय क्षेत्र श्री चौबीसी जैन बड़ा मंदिर में पण्डित निर्मलकुमारजी जैन एडवोकेट एटा द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में समयसार व रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म के साथ-साथ विविध विषयों पर प्रवचन हुये।

– राजीव बंसल

31. अजमेर (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में पण्डित श्रेणिककुमारजी जैन जबलपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ, जिसमें पण्डित मयंकजी शास्त्री जयपुर का विशेष सहयोग रहा। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। दिनाँक 24 सितम्बर को सामूहिक क्षमावणी का कार्यक्रम हुआ। सभी कार्यक्रमों में ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया का उचित

मार्गदर्शन रहा। **– मनोज कासलीवाल**

32. अलवर (राज.) : यहाँ शिवाजी पार्क स्थित श्री संभवनाथ दि. जैन मंदिर में पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री अलवर द्वारा प्रात: सिद्धचक्र महामण्डल विधान, दशलक्षण विधान एवं श्री संभवनाथ विधान संपन्न हुआ। रात्रि में डॉ. अरुणजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

33. उदयपुर (राज.) : यहाँ प्रभात नगर सेक्टर-5 में डॉ.महावीरप्रसादजी शास्त्री के प्रात: समयसार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। अनेक लोगों ने प्रतिदिन स्वाध्याय का संकल्प लिया। **– सुमतिप्रकाश वालावत**

34. महिदपुर-उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जैन मंदिर में पण्डित शांतिलालजी सोगानी द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

35. बेलगांव (कर्नाटक) : यहाँ पण्डित अभिनवजी मोदी शास्त्री द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान एवं उसके बीच में समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार के आधार से प्रवचन हुये। दोपहर में क्रमबद्धपर्याय एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार पर प्रवचन हुये। इनके अतिरिक्त विदुषी धवलश्री पाटील बेलगांव द्वारा (कन्नड़ भाषा में) रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं पण्डित अलालप्पा हादीमनी तेरदाल द्वारा समयसार पर (कन्नड़ भाषा में) प्रवचन हुये।

36. कुरावली (म.प्र.) : यहाँ पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम द्वारा प्रात: समयसार की गाथा-49 एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। ध्रुवधाम से पधारे पण्डित नेमिचन्द्रजी द्वारा दोपहर में छहढाला की कक्षा तथा सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

37. बड़नगर-उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अनिलकुमारजी पाटोदी द्वारा प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। अन्तिम दिन समाज द्वारा पण्डितजी को 'समाजरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया। **– अशोककुमार शाह**

38. वर्धा (महा.) : यहाँ विदुषी लताताई रोम अकोला द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्म पर सरल भाषा में प्रवचन हुये। **– सुदर्शनकुमार शाह**

(पृष्ठ 22 का शेष ...)

नैमित्तिक सम्बन्ध है और वह सम्बन्ध भी मात्र एकसमय की पर्याय में है; किन्तु त्रिकाली शुद्धजीव में वह मलिनता नहीं है और कर्म के साथ का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध भी नहीं है। ज्ञान, दर्शन, वीर्य की हीनअवस्था को, श्रद्धा को, चारित्र की विपरीत अवस्था को तथा नाम, गोत्र, आयु, वेदनीय के लक्ष्यवाले भाव को शुद्धजीव नहीं कहते; क्योंकि पर्याय में रहनेवाले राग-द्वेष तथा अपूर्णता निकल जाती है, इसलिये वे जीव का स्वरूप नहीं है। राग-द्वेष तथा हीनता पर्याय में होने पर भी उन्हें व्यवहार कहकर, गौण करके तथा वे जीव में नहीं हैं – ऐसा कहकर द्रव्यदृष्टि कराई है। अतः शुद्धजीव निर्दोष है। **(क्रमश:)**

हमारे विशिष्ट सहायक

जयपुर (राज.) निवासी श्री गौरवजी जैन 1100/- रुपये देकर वीतराग-विज्ञान मासिक पत्रिका के विशिष्ट सहायक बने हैं। आपको वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से धन्यवाद !

शोक समाचार

इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्री क्रान्तिकुमारजी पाटनी का दिनाँक 19 अक्टूबर को 68 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी मुमुक्षु थे। आप मारवाड़ी मंदिर एवं रामचन्द्र नगर मंदिर में नियमित स्वाध्याय चलाते थे। आप दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ बाहर भी जाते थे। ट्रस्ट द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान की गतिविधियों में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहता था। आपके चिर वियोग से मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 व 3 नवम्बर	मंगलायतन विश्वविद्यालय	दीक्षान्त समारोह
4 से 7 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
14 व 15 नवम्बर	हेरले (कोल्हापुर)	जिनमंदिर शिलान्यास
18 से 21 नवम्बर	दिल्ली	अष्टाह्निका महापर्व
17 से 23 दिसम्बर	मंगलायतन	पंचकल्याणक
25 से 31 दिसम्बर	इन्दौर (मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
15 से 20 जनवरी	उदयपुर	पंचकल्याणक

अवश्य पधारें !

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में 16 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में अवश्य पधारें।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक